किताब है – योग विज्ञान,
रचयिता हैं – आदि मुनीश्वर योगेश्वर श्री शिवमुनी जी महाराज,
अध्याय है – ४,
बिसय है – आत्म विज्ञान

आत्मा में आनन्द है। आत्मा आनन्द का वा सुख का केन्द्र है। आत्मा आनन्दस्वरूप है। यह विषयानन्द की तरह मिथ्या और जड़ नहीं है। विषयानन्द तो इन्द्रियों द्वारा प्राप्त होता है, जैसे मिठाई का आनन्द विषयानन्द है जो जिह्वा से प्राप्त होता है । मिठाई आदि तमाम सांसारिक विषय जड़ होने से मिथ्या हैं। जिसका अस्तित्व उसके भीतर नहीं है-वह मिथ्या है और असत्य है। जड़ का अस्तित्व जड़ के भीतर नहीं है; मिठाई स्वयं नहीं जानती कि हम मिठाई है; आत्मा जानती है कि यह मिठाई है। मिठाई का अस्तित्व भी मिठाई के भीतर नहीं है, आत्मा के भीतर है। आत्मा जानती है कि यह मिठाई है; क्योंकि मिठाई जड़ है और असत् है। इसे विस्तार से हम अलग अपने ग्रन्थों तथा "ज्ञान-शक्ति" के लेखों में प्रकट कर चुके हैं। मिठाई जड़ है, अतः मिठाई का आनन्द जड़ है, पर आत्मा का आनन्द चेतन है। अतः आत्मा का आनन्द चिदानंद है। सब आनन्दो का केन्द्र आत्मा में है । मिठाई का आनन्द भी मिठाई नहीं जानती। वह मिठाई स्वयं मिठाई से आनन्द नहीं पाती । मिठाई का आनन्द आत्मा लेती है । मिठाई नहीं जानती है कि हम मिठाई हैं, आत्मा जानती है कि वह मिठाई है वा उसमें मिठाई है। अतः विषयानन्द का केन्द्र भी आत्मा में है; विषयों में नहीं। आत्मा ही सब प्रकार का आनन्द लेती है, आत्मा ही सब आनन्दों की जड़ है। आत्मानन्द सच्चिदानन्द (सत्-चित्-आनन्द) है। जिसमें अपने होने का वा अपने 'अस्थित्व' का भान है, वही सत्य है। 'मैं हूँ' या 'हम हैं' जिसके भीतर यह वर्तमान है-वही सत्य है। जो वास्तव में नहीं है, जिसका अस्तित्व नहीं है, जो है ही नहीं वा जिसका होना झूठ है; वही मिथ्या और असत्य है। अतः आत्मा वा आत्मानन्द सत् वा सत्य है। आत्मा में 'अस्ति' का भाव है। शरीर के भीतर बैठी हुई आत्मा कह रही है कि

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

मैं हूँ; अतः आत्मा सत् है और संसार असत् है। जड़ संसार स्वयं नहीं जानता कि मैं हूँ; अतः जड़ संसार के भीतर वा लोहा और लक्कड़ के भीतर अपने होने का भान नहीं है।

वह स्वयं नहीं जानता कि मैं लोहा हूँ और यदि उसमें उसका अस्तित्व नहीं है; तो वह मिथ्या है। संसार भर में दो ही वस्तु है। एक जड़ है, दूसरा चेतन है। उसी मे से एक सत् है, दूसरा असत्। अतः आत्मानन्द के दो विशेषण हैं, एक सत्, दूसरा चेतन! अतः इस आत्मा का वा इसके आनन्द का नाम सच्चिदानन्द है। इसी 'सच्चिदानन्द' को जिस उपाय से प्राप्त करते हैं, उसी को योग कहते हैं। बाहर से मुड़ते ही, विषयों से मन को खींचकर भीतर ले जाते ही शान्तिमय आनन्द मालूम होने लगता है। बात यह है कि बाहर रहने पर सुख-दुखः मय विषयों का भोग होता है। आत्मा भीतर है । अतः भीतर की ओर मुड़ते ही शान्तिमय आनन्द का अनुभव होने लगता है । विषय-सुख के केवल 5 भेद हैं; जैसे रूप का आनन्द, रस का आनन्द, गन्ध का आनन्द, स्पर्श का आनन्द और शब्द का आनन्द । इसके सिवा एक ही आनन्द और है; जिसे शान्ति का आनन्द कह सकते हैं; यहि आत्मानन्द है। जब मनुष्य विषयोपभोग से थक कर लेट जाता है; तो एक प्रकार का सुख मिलता है, जिसे लोग कहते हैं कि आराम कर रहे हैं, अब आराम है, अब शान्ति है, बड़ा झंझट था। यही शन्तिसुख आत्मसुख है। सो जाने पर भी मनुष्य आत्मसुख को प्राप्त होता है, पर सचेतनता में नहीं अचेतनता में, बेहोशी में । अतः यह आनन्द उस ब्रह्मानन्द वा आत्मानन्द की बराबरी नहीं कर सकता, जो योग द्वारा प्राप्त होता है; क्योंकि योग में चेतनता बनी रहती है और आत्मानन्द का पूर्ण रूप से अनुभव हो जाता है। इस अवस्था में पहुँच कर मनुष्य आत्मा को पा लेता है और उसे प्रत्यक्ष देख लेता है; जान लेता है कि आत्मा की शक्ति अपार है। यदि यह स्वयं अपने से अपने को पकड़ा न दे; तो इसे असंख्य यमराज और उनके दूत भी नहीं पकड़ सकते। मुनिसमाज की विधि से योग करके मनुष्य स्वयं देख लेता है कि वह अब नरक और यमराज के बन्धन से छूटकर मुक्त हो गया। अब वह स्वतन्त्र है, अब वह चाहे जहाँ रहे, उसे न कोई पकड़ सकता है न बाँध सकता है। योगी, मुनि जन्म-मरण के बन्धन से छूट जाता है। मुक्तात्मायें भी जन्म लेती है; पर अपनी इच्छा से, दूसरे के वश में होकर नही। जैसा कि गीता में श्रीकृष्ण से कहलवाया गया है "बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तब अर्जुन।" पर मजहबी ज्ञान हर तरह से बन्धन में डालता है। आत्मा भावनामय है। अतः मजहब को मानकर मनुष्य मजहब के

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

अनुसार अपने को मजहबी कल्पित देवी-देवता, भूत-प्रेत, यमदूत, यमराज और अपने मजहबी ईश्वर के वश में मानता है। अतः जो मुनिसमाज के ज्ञान को नहीं जानता, वह अपने आपमें मजहबी भावनाओं के अनुसार स्वयं अपनी ही भावना से अपने को कल्पित मजहबी योगी, मजहबी गुरु के उपदेश से योग में भी अपने को मजहबी ईश्वर और यमराज आदि देवताओं के बन्धन में डालकर नरक में जाता और दुःख उठाता है। आत्मा तो हर जगह वही है, उतनी ही है, जितनी और जैसा अपने को मानती है। मजहबी ईश्वर और देवताओं का गुलाम समझकर स्वप्न सृष्टि की तरह अपने मजहब के अनुसार ध्यान योग में भी एक देवता की कल्पना कर लेता है।

बात यह है कि एक आत्मा ही आनन्दस्वरूप है; दूसरे में जो आनन्द मालूम होता है, वह इसी आत्मा की कल्पना है । मनुष्य स्वयं से अपने मजहबी ईश्वर की कल्पना करके, उसी के बन्धन में रहने या होने की भावना करके अपने को बाँध देता है। अतः वह मुनिसमाज के योगी की तरह न मुक्त होगा और न अपने आत्मस्वरूप का ठीक-ठीक अनुभव ही कर सकेगा। वह पूर्ण आनन्द, पूर्ण स्वतंत्रता तथा सच्ची मुक्ति को कभी नहीं प्राप्त कर सकता। अतः मुनिसमाज की विधि से किया हुआ योग ही सच्ची मुक्ति और ब्रह्मानन्द का देने वाला है । कुत्ता जव सूखी हड्डी को अपने दाँतों से जोर-जोर से चबाता है; तो उसी के दाँतों का रक्त निकलकर हड्डी में लगता है और उसे चाटने से उसे रक्त का स्वाद आता है, वह जानता है कि यह हड्डी के रक्त का स्वाद है, पर वह उसी के रक्त का स्वाद है। दूध घी खाने से सुख मालूम होता है, दाल-भात खाने में सुख मालूम होता है, पर कुछ अवस्थायें ऐसी हैं या कुछ मनुष्य ऐसे हैं जिन्हें इनमें सुख नहीं मालूम होता। बात यह है कि भोजन का सुख, दूध का सुख और मिठाई का आनन्द, मिठाई, दूध और भोजन में नहीं है। भोजन नहीं जानता कि हमारे में यह आनन्द है या हम भोजन हैं। ज्वर के रोगी को दाल कड़वी लगती है, प्लेग के रोगी को नीम कडुवा नहीं मालूम होता और कुछ विषयों के रोगी को गोल मिर्च कड़वी नहीं लगती। जब अपने भीतर भूख है और आत्मा को भोजन की आवश्यकता है, भोजन में स्वाद मालूम होता है। विषय सुख भी विषय में नहीं है, आत्मा में है। आत्मा ही सुख का केन्द्र है । मन्दिर का राग, भोग और नाच गाने की सुख मन्दिर के भगवान के या मन्दिर के दीवारों को अथवा वहां के तबला-सारंगी को नहीं है, आत्मा को है। आत्मा ही बाजा बजाती, गाती, नाचती और फिर उसका आनन्द भी लेती है । जड़ स्वरुप से

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

बद्ध है और जो उसके संसर्ग में जाता है और जिस सीमा तक जाता है, वह उस सीमा तक बद्ध हो जाता है । पर चेतन स्वरूप से सच्चिदानन्द और मुक्त है; जड़ विषयों के योग से बद्ध है। यह अपने ही हाथों द्वारा या अपनी बुद्धि द्वारा रचे हुये मजहब, मजहबी देवता, मजहबी ईश्वर और राजनीति से बद्ध होता है। पर मुनि समाज का ज्ञान मनुष्य को सबसे छुडाकर आत्मा की ओर ले जाकर मुक्त और आनन्दमय बना देता है। मजहब आदि के दूसरे ज्ञान मनुष्य को अपनी आत्मा से छुड़ाकर मुक्ति के नाम से बद्धता और सुख के नाम से झंझट और अशान्ति देते हैं। मुनिसमाज का योग बहुत ही सरल है, क्योंकि इसमें न कहीं आना है, न जाना है। केवल अपने से अपने आप में समाना है।

--समाप्त--

DRM Software Review
Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.